International Journal of Multidisciplinary Research and Development

Volume:2, Issue:4, 135-137
April 2015
www.allsubjectjournal.com
e-ISSN: 2349-4182
p-ISSN: 2349-5979
Impact Factor: 3.762

डॉ॰ किरण ग्रोवर
एसो॰प्रो॰,स्नातकोत्तर हिन्दी
विभाग,डी॰ए॰वी॰कॉलेज,अबोहर।
चलभाष–094783–20028

कमलादास जी की 'मेरी कहानी' : जीवन का सत्यांकित दस्तावेज़

डॉ॰ किरण ग्रोवर

सारांशः
साहित्य की विधाओं में आत्मकथा जीवन की निकटस्थ विधा है। आत्मकथाकार को स्मृति–कोष की अगणित स्मृतियों में से सम्पादन और निर्वाचन करना पड़ता है। भावनाओं का यथार्थ दर्शन करवाते समय लेखक 'भाव–सत्य' का सहारा लेता है। साहित्यकारों ने आत्मकथाओं में भावनाओं की सघनता के माध्यम से अनुभव जगत की अनुभूतियों को संस्पर्शित किया है। आत्मकथा में अपने सम्बन्धों के सन्दर्भ में कथाकार के मुख से निस्सृत वाक्य अधिक विश्वसनीय होते हैं तथा पाठक को साधारणीकरण की स्थिति तक पहुँचाते हैं। दाम्पत्य जीवन में विवाह एक आधारशिला है। साहित्यकारों ने आत्मकथाओं में 'स्व' को उद्घाटित करने की आन्तरिक विवशता से आत्मकथा लेखन सम्पन्न किया है। कमलादास जी ने भोगे हुए जीवन की अनुभूतिपरक तीव्रता, संचित स्मृतियाँ, वेदना, संवेदना, हर्ष, संघर्ष आदि को स्वरूपित किया है। कमलादास जी की आत्मकथा 'मेरी कहानी' का अनुवाद श्री सुदर्शन चोपड़ा जी ने किया है।इस आत्मकथा में कमलादास जी ने अपने जीवन का तूफ़ान, तूफ़ान का सैलाब, भावनाओं की सघनता को वाणी देते हुए भोगे हुए जीवन का सत्यांकित दस्तावेज़ रेखांकित किया हे। आत्मकथा के क्षेत्र में कमलादास जी का योगदान साहसपूर्ण व चुनौती मय कदम है जो आत्मकथा लेखन की कसौटी है।

बीज शब्दः– आत्मकथा, साहित्य, कमलादास, सुदर्शन चोपड़ा, सत्यांकित दस्तावेज।

मूल प्रतिपादनः
साहित्य को जीवन की आलोचना कहा जाता है। वास्तव में साहित्य एक बच्चा है, साहित्यकार उसकी माँ है और परिवेश उसका पिता है। परिवेश ही साहित्यकार को साहित्य लिखने के लिए प्रेरित करता है। साहित्य की विधाओं में आत्मकथा जीवन की निकटस्थ विधा है। आत्मकथा स्वयं व्यक्ति के द्वारा अपनी ही जीवनगाथा की वह प्रस्तुति है, जो पूर्णतया निष्कपटतापूर्ण, गुण–दोषों पर प्रकाश डालते हुए बिना किसी कल्पना के कलात्मक ढंग से लिखी जाती है।[1] वैयक्तिकता आत्मकथा का प्राण–तत्त्व है। कोई व्यक्ति जब आत्मकथा लिखता है तो अपने प्रतिबिम्ब को अपने ही हाथों से संवारने का प्रयत्न करता है। आत्मकथा में व्यक्ति और विषय दोनों बिम्ब–प्रतिबिम्ब रूप में विद्यमान रहते हैं।[2] आत्मकथा में जीवन के स्वरूप को निश्चित करने में परिवेश की क्या भूमिका है, इस पर भगवतशरण भारद्वाज जी ने लिखा है– ''परिवेश के भीतर प्रगति और जड़ता का अन्तर्द्वन्द्व होता रहता है। अपने–अपने ढंग से दोनों ही सक्रिय होते हैं। जीवन के रूप का निश्चितयन करने में अपनी भूमिका का निर्वाह करते हैं। आत्मकथाकार दोनों ही प्रकार के तत्त्वों पर विक्षेप कर अपने जीवन में उनके सम्पादित भूमिका का अंकन करते हैं।[3] आत्मकथा अधिकाधिक मानवीय गुणों से संवलित होने के कारण साहित्य की महत्त्वपूर्ण विधा है जिसमें आत्म प्रकाशन, आत्मसम्प्रेषण, आत्मविवेचन, आत्मनिरीक्षण, आत्मविकास करने के लिए आत्मकथाकार को उपयुक्त श्रम संधान करना पड़ता है।

आत्मकथाकार को स्मृति–कोष की अगणित स्मृतियों में से सम्पादन और निर्वाचन करना पड़ता है। संस्कारों से ही चूंकि व्यक्तित्व का निर्माण होता है, अतः व्यक्तित्व निर्माण की कहानी 'आत्मकथा' इनके सहयोग से कैसे वंचित रह सकती है? भावनाओं का यथार्थ दर्शन करवाते समय लेखक 'भाव–सत्य' का सहारा लेता है। अपनी क्षमता–अक्षमता, दुर्बलता–सबलता से परिचित व्यक्ति ही आत्म–चरित्र की रचना में सफल हो सकता है।आत्मकथा निजी स्मृतियों को अंकित करने की आकांक्षा है तथा दूसरी ओर विसंगतियों से भरे संसार में निजी 'स्व' को प्रक्षेपित करने का प्रयास भी अन्ततः आत्मकथा को 'अहम् की यात्रा' से विवेचित करना उचित है।[4] सौद्देश्यपूर्ण आत्मकथाओं की रचना व्यष्टि को दृष्टि में न रखकर समष्टि हेतु रची जाती हैं। आत्म–प्रकाशन की अदम्य भावना आत्मकथा के लेखन का सशक्त प्रयोजन होती है।

रागात्मकता वृत्ति की अधिकता के कारण भावनाओं का सहज उच्छलन आत्मकथा के प्रणयन का कारण हो सकता है। भावुक व्यक्ति जब अपने अन्तर्मन पर चढ़ते भावनाओं के दबाव से विवश हो जाता है, तब आत्मकथा के रूप में उन भावनाओं को अभिव्यक्त करता है। साहित्यकारों के जीवन रहस्य को जानने का मानव–मन में सहज कौतूहल होता है। साहित्य के अध्येता को साहित्यकारों

ब्वततमेचवदकमदबमरू
डॉ॰ किरण ग्रोवर
एसो॰प्रो॰,स्नातकोत्तर हिन्दी
विभाग,डी॰ए॰वी॰कॉलेज,अबोहर।
चलभाष–094783–20028

का सम्पूर्ण परिचय जानने की विशेष उत्सुकता रहती है कि साहित्यकार ने किन परिस्थितियों में साहित्य का निर्माण किया। आत्मकथाकारों ने पारिवारिक, सामाजिक, सांस्कृतिक वातावरण में किस प्रकार जीवन–निर्वाह किया है। साहित्यकारों ने आत्मकथाओं में भावनाओं की सघनता के माध्यम से अनुभव जगत की अनुभूतियों को संस्पर्शित किया है। आत्मकथा में अपने सम्बन्धों के सन्दर्भ में कथाकार के मुख से निस्सृत वाक्य अधिक विश्वसनीय होते हैं तथा पाठक को साधारणीकरण की स्थिति तक पहुँचाते हैं।[5]

गृहस्थाश्रम सभी आश्रमों का द्वार है। विधि द्वारा विवाह के उपरान्त ही स्त्री और पुरुष को पति–पत्नी का दर्जा दिया जाता है और पति–पत्नी को दम्पती माना गया हैं। दाम्पत्य जीवन में विवाह एक आधारशिला है। विवाह के माध्यम से पति–पत्नी गृहस्थाश्रम में प्रविष्ट होते हैं; अपनी यौन इच्छाओं की पूर्ति, सन्तानोत्पत्ति एवं बच्चों का पालन पोषण करते हैं। पति–पत्नी के पारस्परिक आकर्षण को मर्यादित करने का उपक्रम पारिवारिक ढांचे की आधारशिला के रूप में दाम्पत्य सम्बन्धों में विद्यमान रहता है।[6]

स्त्री और पुरुष के बीच प्रेम भाव, काम–भाव का ही परिष्कृत रूप है। मानव के बौद्धिक विकास के साथ–साथ उसमें व्यक्तिगत रुचियाँ विकसित हुई तब एक विशेष पुरुष व विशेष स्त्री के प्रति अधिक आकर्षण अनुभव करने लगा। सामान्य से विशिष्ट तक ही यात्रा ही काम से प्रेम की यात्रा कही जा सकती है। साहित्यकारों ने आत्मकथाओं में 'स्व' को उद्घाटित करने की आन्तरिक विवशता से आत्मकथा लेखन सम्पन्न किया है तथा अपनी विवशता, आत्मिक छटपटाहट से जुड़ी भावना को संदर्भित भी किया है। आत्मकथाओं में साहित्यकारों के व्यक्तिगत जीवन के पहलू स्वतः खुलते चले जाते है। आत्मकथाकारों ने जीवन के सत्यांकित इतिहास को रूपायित करते हुए अपने मित्र की विलीनता का बेबाकी से अभिव्यंजन किया है।[7] साहित्यकारों की आत्मकथाएँ अनुभव जगत के वसीयतनामे हैं जिनमें वैविध्य एवं एकांतिकता, सांसारिकता और फक्कड़पन जैसी परस्पर विरोधी धाराएँ सम्पूर्ण संवेदनशीलता से मिलती है।

निश्चय ही हिन्दी आत्मकथा के इतिहास में कमलादास जी ने लोकप्रियता अर्जित की है। उनके व्यक्तिगत जीवन की उथल–पुथल, उनके विविध आकर्षण, मानसिक संघर्ष, विशिष्ट जीवन–अनुभवों में पाठक का औत्सुक्य विचारणीय बन पड़ा है। कमलादास जी ने अपने जीवन का तूफ़ान, तूफ़ान का सैलाब, भावनाओं की सघनता, तनावों का कसाव आदि को वाणी देने का सातत्य प्रयास किया है एवं भोगे हुए जीवन की अनुभूतिपरक तीव्रता, संचित स्मृतियाँ, वेदना, संवेदना, हर्ष, संघर्ष आदि का सत्यापित स्वरूप निरूपित किया हे। आत्मकथा के क्षेत्र में कमलादास जी का योगदान साहसपूर्ण व चुनौती मय कदम है जो आत्मकथा लेखन की कसौटी है। कमलादास जी की आत्मकथा 'मेरी कहानी' का अनुवाद श्री सुदर्शन चोपड़ा जी ने किया है। इस आत्मकथा में कमलादास जी ने वास्तविक जीवन का दस्तावेज़ रूपायित करके बचपन से लेकर पचास वर्षों के जीवन को निरूपित किया है। जहाँ–जहाँ लेखिका के अन्तरंग जीवन के दर्शन होते हैं वहाँ–वहाँ आत्मकथा के वैशिष्ट्य में लेखिका का चरित्र उद्घाटित हुआ है। यह आत्मकथा बाहरी जगत की अपेक्षा आन्तरिक जगत की प्रतिक्रियात्मक अभिव्यक्ति है।

इस आत्मकथा में अपने पारिवारिक सम्बन्धों के सन्दर्भ में कमला दास जी ने सिद्ध करना चाहा है कि परिवार का मुखिया होने के कारण पिता अपने बच्चों पर निरंकुश अधिकार रखता है। अपने पिता के अमर्यादित अधिकारों को प्रस्तुत करने के साथ–साथ पुत्र व पुत्री के विरोधी स्वरों का भी मुखरित किया है–'उफ ! किस जोर जबरदस्ती से पिता जी हमें महीने में एक बार कैस्टर ऑयल पिलाया करते । मुंह भीचकर वह विरेचक हमारे हलक में उड़ेला जाता..... हम पड़ तो जाते, मगर रोते सुबकते हुए।''[8]

कमलादास जी ने ऐसी आधुनिक माँ का चित्र प्रत्यंकित किया है जो सन्तान के पालन पोषण में स्व को बन्धन स्वरूप अनुभव करती है। अपनी माँ के उपेक्षापूर्ण व्यवहार का स्वरूप विवेचित किया है–''माताजी को इस सारे ताम झाम से कोई सरोकार नहीं था। वह तो थी कवयित्री। पड़ी–2 मल्याली कविताएँ लिखा करती । पेट के बल लेटकर ही लिखती । सो भी एक बडे मसहरी तने पलंग पर।'[9]

भाई बहिन के सम्बन्धों की आत्मीयता व इकट्ठे बीमार होने की अवस्था का भी चित्रांकन कमलादास जी ने किया है–''हम लोग आमतौर पर एक साथ ही बीमार पड़ा करते थे। मैं अपने भाई से कहा करती, मैं वकील बनूँगी जब मैं और मेरा भाई बिछुड़ गए तो मैं अकेली खोई सी रहने लगी क्योंकि हम दोनों के बीच एक अन्तहीन संवाद का सिलसिला रहता था, बावजूद ख़ामोशी के।'[10]

कमला दास जी ने अपने मंगेतर की वासनात्मक भाव धारा के प्रति भविष्य में विचारों के दायरे में 'स्व' को लेकर भावी विचारधारा का भी सम्प्रेषण किया है। विवाह के सन्दर्भ में कमला–दास जी का मन्तव्य इस प्रकार है–"और जनवरी में मेरी शादी हो गई। आम के पेड़ों पर बौर खिली थी और मधुमक्खियों की भिनभिनाहटें गूँज रही थी।"[11]

इस आत्मकथा में व्यक्ति स्वातन्त्र्य और पारिवारिक अनुशासन से प्रभावित बहू का प्रतिबिम्ब कमलादास जी नेरूपायित किया है जो सास के कठोर नियन्त्रण से बचना चाहती है जिसके परिणामस्वरुप पति भी उपेक्षापूर्ण व्यवहार करता है–''लेकिन मेरी सास मन ही मन कुड़ा करती उसे लगता कि मैं न तो अपने बेटे का ध्यान रखती हूँ न घर का। जब–2 भी वह बड़बड़ाती मेरे पति को गुस्सा आता और वह गुस्सा उतरता था मुझ पर या मेरे बेटे पर।''[12]

विवाह के समय होने वाली साज सज्जा, मिठाइयाँ, तामझाम,नृत्य–आयोजन, रंग–बिरंगे बल्ब, आदि को शब्दमयी अभिव्यक्ति कमलादास जी ने प्रदान की है। अपने पति के सम्बन्ध में रोमांटिक स्वरूप परिकल्पित करने वाली कमलादास जी ने चांदनी, कोमल ध्वनियाँ, गोया प्यार ,पति की वास्तविकता को मिलन यामिनी के अवसर पर प्रकट किया है–..... "हर रात मुझे कई बार दबोच चुका था.....मेरा प्रतिरोध केवल शारीरिक था, मानसिक नहीं।"[13]

कमलादास जी ने वास्तविक जीवन का दस्तावेज़ रूपायित करते हुए बचपन से लेकर पचास वर्षों में बच्चों के जीवन की अन्तरंगता को विश्लेषित किया है। परिवार के रचनात्मक स्वरूप, भावात्मक आधार का प्रारुप ग्रहण करते हुये कमलादास जी ने यौन सम्बन्धों की अतिशयता का निरूपण किया है–"एक महीने तक निराशा, द्वेष, कड़वाहट सहने के बाद अचानक एक दिन मुझे लग आया कि मैं बड़ी हो गई हैं, बच्ची से सहसा औरत बन गई हूँ।..... पति मुझे रात को छोड़ता नहीं था..... ऐसे जैसे बदला ले रहा हो।"[14]

माता–पिता में सन्तान कामना की मूल प्रवृत्ति विद्यमान होती है। मूल प्रवृत्ति के साथ वात्सत्य व उद्वेग भी समन्वित होता है। कमला दास जी ने गर्भ धारण करने की मनोदशा का भी प्रतिपादन किया है–"और फिर जब मुझे गर्भ रह गया तो मुझे लगातार उबकाइयाँ उलटियाँ आने लगी। मेरी हालत और भी गड़बड़ हो गई।"[15]

पुत्र–प्राप्ति की आकांक्षा प्रबलतम होती है। विभिन्न ग्रन्थों में परिवार के प्रयोजनों में पुत्र–प्राप्ति की कामना को प्रकट किया गया है। परिवार के प्रयोजन निमित्त कमलादास जी ने इसी वृत्ति की सबलतम अभिव्यक्ति की है–''एक दिन मुझे गर्भ में हलचल सी महसूस हुई कि मेरा बच्चा प्राण धारण कर रहा है। मैंने दादी से कहा–मेरे पेट में बेटा हिल डुल रहा है। दादी बोली–कैसे कह सकती हो कि बेटा ही है।"[16]

यौन सम्बन्ध एवं सन्तानोत्पत्ति के साथ–साथ सन्तान का संरक्षण व भरण पोषण भी अनिवार्य माना गया है। बच्चा परिवार में आज्ञाकारिता, सम्मान, कर्त्तव्य का निर्वाह, उदारता, सहनशीलता आदि सद्गुणों को ग्रहण करता है। कमलादास जी ने अपने पति की उत्तरदायित्वहीनता का सम्यक् निरूपण किया है–''अक्सर वह आधी रात को उठकर हमारे बैडरूम का दरवाज़ा खटखटाने लग जाता..... उसने दो साल के बेटे को रसोई घर में बैठाकर बाहर से ताला लगा दिया और वह बेचारा ठंडे फर्श पर पड़ा–पड़ा बिलबिलाता रहा।..... पति के प्रति मानसिक लगाव रहा था; वह खत्म हो चुका था। हर रात मैं अपना शरीर उसको सौंप देती।"[17]

प्राणिशास्त्रीय आधार पर पति–पत्नी के सम्बन्धों को सतत व अविच्छिन्न माना गया है। पति के यौन सम्बन्धों की विवशता का कमलादास जी ने मनोवैज्ञानिक संश्लेषण किया है–"फिर मैं दूसरी बार गर्भवती हुई तो मुझे वाकई लगने लगा कि मैं बिल्कुल बदल गई हूँ..... मैने दादी से शराब पीने की इच्छा प्रकट की तो दादी ने जैसे कैसे बोतल का बन्दोबस्त कर दिया..... नशे मे मैं जीवन की सारी कड़वाहटें भूल जाया करती थी।"[18]

कमला दास जी ने अपनी मानसिक विक्षिप्तता की अवस्था में अपने पति की विकलता को अनुभूत किया क्योंकि उनके अपने संसार के सीमान्त धुंधले हो रहे थे। यौन भावना की पूर्णता हेतु कमलादास जी ने अपने पति की शारीरिक निकटता का सशक्त प्रतिपादन किया है–"मेरा पति मुझे गर्म पानी से नहलाता फिर मुझे अपनी गोदी में बैठा लेता और बड़े प्यार से सहलाता पुचकारता..... भले ही यौन भावना का प्रतिरूप था यह जीवन में पहली बार मैंने स्वयं को सम्पूर्ण समर्पित करना सीख लिया है..... अपने अहं को बनाए रखते हुए।"[19]

परिवारिक सदस्यों में अप्राप्य महत्त्वाकांक्षाओं को लेकर उद्विग्नता का आभास होता है। बदलते सन्दर्भ में दाम्पत्य जीवन सम्बन्धी मान्यताएँ शिथिल होती जा रही हैं। पति–पत्नी के परस्पर सम्बन्धों के मूल्य भी बदल रहते हैं। मानव सम्बन्धों की विशृंखलता के कारण मानवीय संवेदनाएँ आहत हो गई है, जिसका प्रभाव पति–पत्नी सम्बन्धों पर अवश्यमेव दृष्टिगोचर होता है। पत्नी पति की सहभागी के रूप में सम्बन्ध निर्वाह करना चाहती है किन्तु समाज में पुरुष का दुहरा दृष्टिकोण सम्बन्धों में निरीहता उत्पन्न कर देता है। कमलादास जी ने इस आत्मकथा के अन्तर्गत पति–पत्नी के पारस्परिक सम्मान, सौहार्द की स्थितियों की प्रतिकूलता का प्रतिपादन किया है–''मैंने पति को खत लिखा कि छुट्टी लेकर तुरन्त चले आओ..... लेकिन हर रात कई–2 बार बच्चे की जगने–रोने से वह परेशान भी हो गया। गुस्से में कहता..... इसे लेकर अपनी दादी के कमरे में चले जाओ।''[20]

पत्नी के दाम्पत्येतर सम्बन्धों का आभास जब पति को हुआ, तब उनकी मनःस्थिति असन्तुलित हो गई, जो कि स्वाभाविक है। पति–पत्नी अप्राप्य महत्त्वाकांक्षाओं को लेकर उद्विग्न हो जाते है। बदलते सन्दर्भ में दाम्पत्य जीवन सम्बन्धी परम्परागत नैतिक मान्यताएँ शिथिल होती जा रही है। कमला दास जी ने भूरी आँखों वाले दोस्त के पत्र व्यवहार व पति की प्रतिक्रिया का शब्दबद्ध अभिव्यंजन किया है–''मेरे उस भूरी आँखों वाले दोस्त ने दिल्ली से एक खत लिखा था..... मेरे पति के हाथों पड़ गया..... वही अजब सी मनःस्थिति में आ गई थी मैं।''[21]

कमलादास जी ने प्रौढ़ावस्था में पति के शरीर की निकटता को अनुभूत किया तथा मानसिक रूप से विक्षिप्त होने की स्थिति में यौन भावना के मुखर रूप कों शब्दबद्व किया है–''मैं स्वभाव से शर्मीली थी इसलिए जब–2 भी वह मुझे निर्वसन करता, लज्जा मेरे अनावरित गात पर एक अन्य त्वचा सी लिपट जाती। मानसिक रोग को समर्पित करना सीख लिया..... अपने अहं को बनाए रखते हुए।'[22]

वास्तविक जीवन का दस्तावेज़ रूपायित करते हुए बचपन से लेकर पचास वर्षों में स्व जीवन की अन्तरंगता को विश्लेषित करके आत्मकथा के प्रयोजनार्थ भुक्त यथार्थ की अभिव्यंजना को सुस्पष्ट करते हुए दाम्पत्य सम्बन्धों के परिप्रेक्ष्य में अपनी विचारधारा का अनुशीलन करते हुए कमलादास जी ने पाठकों की जिज्ञासा का शमन किया है। जमीनी सच्चाइयों का रूपांकन करते हुए बदलते परिवेश में दाम्पत्य सम्बन्धों में आए ठहराव पर भी चिन्तन मनन किया है जिससे इस आत्मकथा में कमलादास जी के व्यक्तिगत जीवन के पहलू स्वतः खुलते चले जाते है एवम् इन्होंने जीवन के सत्यांकित इतिहास को रूपायित करते हुए अपने मित्र की विलीनता का बेबाकी से अभिव्यंजन किया है। कमलादास जी ने अपने जीवन का तूफ़ान, तूफ़ान का सैलाब, भावनाओं की सघनता, तनावों का कसाव आदि को वाणी देते हुए भोगे हुए जीवन की अनुभूतिपरक तीव्रता, संचित स्मृतियाँ, वेदना, संवेदना, हर्ष, संघर्ष आदि का सत्यापित स्वरूप निरूपित किया हे। आत्मकथा के क्षेत्र में कमलादास जी का योगदान साहसपूर्ण व चुनौती मय कदम है जो आत्मकथा लेखन की कसौटी है। विवेच्य आत्मकथा कमलादास जी के बाहरी जगत की अपेक्षा आन्तरिक जगत की प्रतिक्रियात्मक अभिव्यक्ति है जिसके परिणामस्वरूप अपने जीवन के प्रच्छन्न अनुभव पाठकों के सम्मुख विश्लेषणार्थ प्रस्तुत किये हैं।

संदर्भ ग्रंथः–

1 गोविन्द त्रिगुणायतः शास्त्रीय समीक्षा के सिद्धान्त, एस चॉद एण्ड कम्पनी, दिल्ली, 1968, पृ0 508
2 बैजनाथ सिंहलः हिन्दी विधाएं स्वरूपात्मक अध्ययन, हरियाणा साहित्य अकादमी, चण्डीगढ़, 1988 पृ0 186
3 भगवान शरण भारद्वाज' हिन्दी जीवनी साहित्य सिद्धान्त और अध्ययन, परिमल प्रकाशन, इलाहाबाद, पृ0 61
4 विनीता अग्रवालः हिन्दी आत्मकथाएँ : सिद्धान्त एवं स्वरूप विश्लेषण, सचिन प्रकाशन, 1989 ,पृ0 57
5 कमलेश सिंहः हिन्दी आत्मकथा : स्वरूप एवं साहित्य, नेशनल पब्लिशिंग हाऊस, दिल्ली, 1989 पृ0 26
6 विश्व बन्धु 'व्यथित':ः हिन्दी का आत्मकथा साहित्य, राधा प्रकाशन, दिल्ली, 1989 ,पृ0 72
7 उर्मिला भटनागरः हिन्दी उपन्यास साहित्य में दाम्पत्य चित्रण, अर्चना प्रकाशन, दिल्ली, 1981
8 कमलादासः मेरी कहानी, अनु॰ सुदर्शन चोपड़ा, सरस्वती विहार, दिल्ली, पृ0 15
9 वही, पृ0 12
10 वही,पृ0 40
11 वही, पृ0 76
12 वही,पृ0 86
13 वही, पृ0 79
14 वही, पृ0 79–80
15 वही, पृ0 80
16 वही, पृ0 80
17 वही, पृ0 89
18 वही, पृ0 93
19 वही, पृ0 96
20 वही, पृ0 83
21 वही, पृ0 101
22 वही, पृ0 96